LEARNING AND TEACHING

APCO

Question -: शिक्षण के विभिन्न चरण क्या है, इसकी चर्चा करें,
अथवा
शिक्षण की विभिन्न अवस्थायें कौन - 2 सी है, वर्णन करें,

★ शिक्षण का अर्थ -:

शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है, शिक्षण प्रक्रिया का मुख्य केंद्र बिंदु अधिगम को प्रभावशाली बनाना है। शिक्षण क्रियाओं को कुछ-न-कुछ परिणाम प्रदर्शित करना ही होगा, अन्यथा यह केवल क्रियाएँ बनकर रह जाएंगी। इसमें एक अनुभवी व्यक्ति किसी अनुभवहीन व्यक्ति को ज्ञान प्रदान करता है। तो वह शिक्षण कहलाता है, शिक्षण के द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन होते हैं और उसका विकास होता है शिक्षण एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। इन क्रियाओं द्वारा छात्रों को सीखने में सहायता प्रदान की जाती है।

★ शिक्षण क्रियाओं का क्रमबद्ध विश्लेषण तीन चरण में किया जाता है -:

1. शिक्षण से पूर्व की अवस्था
2. शिक्षण की अन्तः क्रियात्मक अवस्था
3. शिक्षण के बाद की अवस्था

1) शिक्षण से पूर्व की अवस्था -:

इस अवस्था में शिक्षण के लिए योजना बनाई जाती है। यहा शिक्षण करने से पहले अध्यापक जो भी योजना बनाता है। या कार्य करता है, वे इस अवस्था के अंतर्गत आते हैं। इसे तैयारी की अवस्था भी कहा जाता है,

इस अवस्था के कार्य व क्रियाएँ -:

i) शिक्षण के उद्देश्यों को निर्धारित करना,

ii) पाठ्य - सामग्री का चयन करना,

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

iii) पाठ्य-सामग्री के तत्वों को क्रमबद्ध करना।
iv) शिक्षण युक्तियों एवं प्रविधियों के संबंध में निर्णय
v) शिक्षण की युक्तियों का विस्तार

शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारित करना :-
अध्यापक सबसे पहले उद्देश्यों को निर्धारित करता है, और व्यवहार में परिवर्तन के रूप में उनको परिभाषित करता है। इसमें उद्देश्य निर्धारित करने में विद्यार्थियों के प्रारंभिक व अंतिम व्यवहार को ध्यान में रखा जाता है।

a) शिक्षण की उन सभी व्यवहारिक क्रियाओं की पहचान की जाती है, जो छात्रों को शिक्षण के समय प्रभावित करती है।
b) अपेक्षित व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है,

ii) पाठ्य-सामग्री का चयन :—
अध्यापक विद्यार्थियों को पढ़ाई जाने वाली पाठ्य-सामग्री के चयन के संबंध में निर्णय लेता है। वह पाठ्य-सामग्री का विश्लेषण करता है। अध्यापक निदानात्मक पक्ष पर अधिक बल देता है,

* पाठ्य-वस्तु के संबंध में निर्णय लेते समय निम्न बातों का ध्यान रखते हैं।
a) छात्रों के लिए प्रस्तावित पाठ्यक्रम की क्या आवश्यकता है।
b) छात्रों का पूर्व व्यवहार क्या है,
c) छात्रों की उनके स्तर पर क्या आवश्यकता है,
d) छात्रों के लिए किस स्तर की अभिप्रेरण प्रभावशाली होगी।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

iii) पाठ्य - सामग्री के तत्वों को क्रमबद्ध करना :-

पाठ्य - वस्तु तथा छात्रों के स्तर को ध्यान में रखते हुए अध्यापक अपने प्रस्तुतीकरण के लिए समुचित शिक्षण की व्यूह रचना का चयन करता है। शिक्षण की युक्तियों के चयन में शिक्षण - उद्देश्यों को प्रधानता दी जाती है।

iv) शिक्षण की युक्तियों एवं प्रविधियों के संबंध में निर्णय :-
उद्देश्य निर्धारित करके, पाठ्य - सामग्री का चयन करके अध्यापक पाठ्य - सामग्री के प्रस्तुतीकरण के लिए शिक्षण की युक्तियों का चयन करता है। शिक्षण की युक्तियों के चयन में उद्देश्यों को महत्व दिया जाता है। और शिक्षण विधियों में पाठ्य - सामग्री को ध्यान में रखा जाता है। व्यूह रचना का चयन करते समय यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि शिक्षण की समाप्ति के उपरांत उद्देश्यों की प्राप्ति होनी चाहिए।

v) शिक्षण की युक्तियों का विस्तार :-
इसमें कब प्रश्न पूछना है, कब भाषण देना है। कहां चार्ट तथा मानचित्र का प्रयोग करेगा, कहा श्यामपट्ट का प्रयोग करेगा, कहा मूल्यांकन प्रश्न पूछे जाएगें। इन शिक्षण क्रियाओं का प्रथम अवस्था में निर्धारित कर लिया जाता है।

2. शिक्षण की अन्त क्रियात्मक अवस्था .

शिक्षण अन्तः क्रिया स्तर पर शिक्षक छात्रों को अनेक प्रकार की शाब्दिक अभिप्रेरणा प्रदान करता है। जैसे :- प्रश्न पूछना, सुनना, अनुक्रिया करना, व्यवस्था करना तथा निर्देशन देना आदि।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

1. कक्षा के आकार की अनुभूति
2. छात्रों का निदान
3. क्रिया तथा प्रतिक्रिया -:

a) उद्दीपनों का चयन या प्रेरकों का चयन
b) उद्दीपनों का प्रस्तुतीकरण या शाब्दिक व अशाब्दिक
c) युक्तियों का विचार → प्रस्तुतीकरण
d) युक्तियों का प्रयोग प्रतिपुष्टि व पुनर्बलन

1. कक्षा के आकार की अनुभूति -:

अध्यापक कक्षा में प्रवेश करते ही उसका पहला कार्य कक्षा की स्थिति को अपना अवलोकन करने का है। कक्षा में प्रवेश करते ही विद्यार्थियों के चेहरे पर नजर डालता है। कक्षा के वातावरण का समझने का प्रयास करता है। वह कक्षा के विद्यार्थियों का अवलोकन करके यह पता लगाता है कि विद्यार्थी कैसे है

2) छात्रों का निदान -:

कक्षा के आकार की अनुभूति के बाद अध्यापक यह मालूम करता है कि छात्रों का स्तर क्या है। विषय के संबंध में पूर्व ज्ञान कितना है। इसमें, वह छात्रों की रुचियां, क्षमता, अभिवृत्ति, पृष्ठभूमि आदि को जानता है

इस तरह शिक्षक मुख्य रूप से तीन पक्षों का निदान करता है-:

a) छात्रों की क्षमताओं तथा योग्यताओं का उपचार
b) छात्रों की अभिवृत्ति तथा अभिरुचियां,
c) छात्रों की शैक्षिक पृष्ठभूमि,

अध्यापक प्रश्नों की सहायता से इन पक्षों की जानकारी प्राप्त करता है।

प्रत्यक्षीकरण → निदान → अनुक्रिया,

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

प्रत्यक्षीकरण द्वारा छात्रों की योग्यताओं एवं अभिरुचियों के संबंध में जानकारी प्राप्त करता है, उसको ध्यान में रखकर अपने शिक्षण की अनुक्रियाओं का आरंभ करता है।

3) क्रिया तथा प्रतिक्रिया

ये दोनों क्रिया छात्रों व अध्यापक के बीच होती है इसे शाब्दिक अंतः क्रिया कहा जाता है। अध्यापक द्वारा प्रश्न पूछने पर विद्यार्थी उन प्रश्नों के प्रति प्रतिक्रिया करता है। इसी प्रकार विद्यार्थी द्वारा प्रश्न पूछने पर अध्यापक भी प्रतिक्रिया करता है, जब अध्यापक या प्रश्नों के उत्तर देते हैं। या अपने विचार प्रकट करते हैं। शिक्षण की अन्तः क्रियात्मक अवस्था में इसे प्रतिक्रिया करना कहा जाता है।

★ इसमें जो क्रियाएं आती हैं।-:

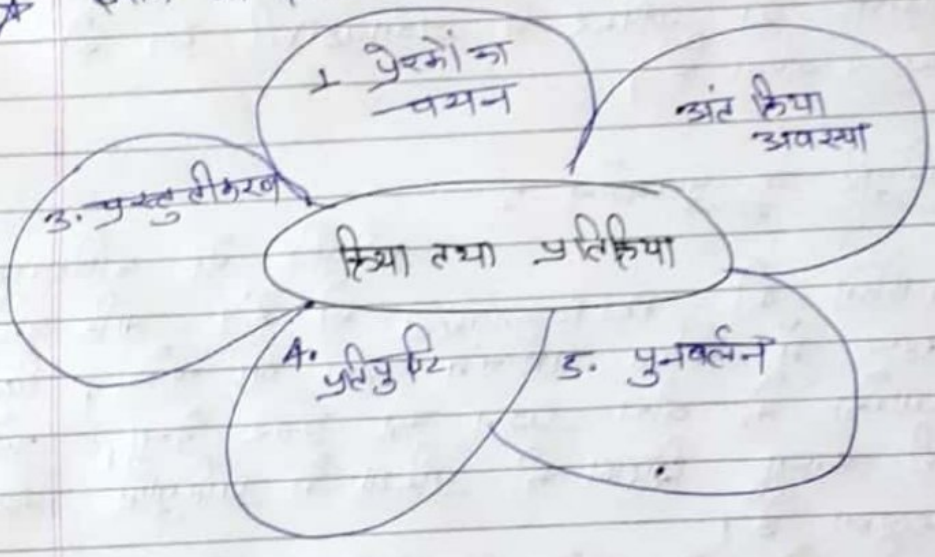

प्रश्नों का चयन :

प्रश्नों का चयन द्वारा शिक्षण की प्रक्रिया मानी जाती है। जो शाब्दिक व अशाब्दिक दोनों होती है। अच्छे अध्यापक दोनों क्रियाओं में से कौन सी का चयन करता है, कौन-सी का नहीं, ये उस पर निर्भर करता है, कक्षा में परिस्थिति उत्पन्न होने के तुरंत बाद उसे प्रश्नों का चयन करना पड़ता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

b) अन्त क्रिया अवस्था :-

अन्त: क्रिया अवस्था कक्षा में अध्यापक और विद्यार्थियों की अन्त: क्रिया को दर्शाते हुए दो भागों में बांटा है। (a) शाब्दिक (b) अशाब्दिक इस अवस्था मे शाब्दिक अन्त: क्रिया महत्वपूर्ण होती है। यह अध्यापक और विद्यार्थियों के बीच आपसी अनुकरण अनुक्रिया द्वारा होती है।

c) प्रस्तुतीकरण :-

अध्यापक पाठ्यसामग्री को प्रस्तुत करता है। उसका व्याख्यान करता है। प्रदर्शन करता है। दृश्य श्रव्य सामग्री का प्रयोग करता है। श्यामपट्ट का प्रयोग करता है। पाठ्य-सामग्री को रुचिकर व प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है।

d) प्रतिपुष्टि व पुनर्बलन :-

प्रतिपुष्टि से अभिप्राय विद्यार्थियों की Performances से है। ताकि उनके व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाए जा सके। विद्यार्थी अध्यापकों के बीच प्रश्न का उत्तर देना। उसे सही बताना। शिक्षण की प्रक्रिया में प्रतिपुष्टि करना कहलाता है।
प्रतिपुष्टि को दो भागों में विभक्त किया गया है। शाब्दिक व अशाब्दिक। जब अध्यापक भाषा का प्रयोग करके विद्यार्थी को बताता है कि उत्तर सही है। तो वह शाब्दिक प्रतिपुष्टि का उदाहरण है। और संकेत या भाव में बताता है। तो अशाब्दिक।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

b) पुर्नबलन :- धनात्मक व ऋणात्मक

धनात्मक पुर्नबलन → इसमें अपेक्षित प्रतिक्रिया के होने की संभावना बढ़ जाती है जैसे → प्रशंसा, पुरस्कार आदि के द्वारा।

ऋणात्मक :-
इसमें अवांछनीय प्रतिक्रिया के पुन: होने की संभावना कम हो जाती है। जैसे → डाँटना, दण्ड आदि द्वारा।

शिक्षण प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाना है। प्रतिपुष्टि व पुर्नबलन द्वारा व्यवहार में परिवर्तन लाए जाते हैं।

3. शिक्षण के बाद की अवस्था :-
शिक्षण के बाद की अवस्था मूल्यांकन से संबंधित होती है, इसलिए इस अवस्था को मूल्यांकन अवस्था कहा जाता है।

1) शिक्षण द्वारा व्यवहार परिवर्तन के शुद्ध रूप की परिभाषा
2) मूल्यांकन की उपयुक्त प्रविधियों का चयन
3) प्राप्त साक्षियों से संबंधित नीतियों में परिवर्तन

निष्कर्ष :-
उपरोक्त तीनों अवस्थाएं अपने स्वरूप की दृष्टि से भिन्न होते हुए भी आपस में संबंधित है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Question :- शिक्षा, प्रशिक्षण, अनुदेशन व प्रतिपादन ① में अंतर स्पष्ट करें।

APCO
Date :
Page :

	शिक्षा	अनुदेशन
1. शिक्षा क्षेत्र -:	शिक्षा एक व्यापक अवधारणा है, इसमें औपचारिक, अनौपचारिक तथा निरौपचारिक शिक्षा है।	अनुदेशन एक संकुचित अवधारणा है यह स्कूलिंग का एक अंग है, जो कि स्वयं शिक्षा का अंग है।
2. उद्देश्य -:	शिक्षा व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास से संबंधित है। शिक्षा बच्चे को जीवन के लिए तैयार करती है।	अनुदेशन ज्ञान प्रदान करने या किसी उपयोगी कौशल को सिखाने तक सीमित है, अनुदेशन परीक्षा पास करने के योग्य बनाता है।
3. स्वरूप	यह स्वभाविक प्रक्रिया है। यह बच्चों के आंतरिक शक्तियों के विकास के साथ संबंधित है	यह एक कृत्रिम प्रक्रिया है, क्योंकि इससे प्राप्त ज्ञान आरोपित ज्ञान होता है।
4. पाठ्यक्रम	औपचारिक शिक्षा में निश्चित तथा अनौपचारिक में निश्चित नहीं,	अनुदेशन में पाठ्यक्रम निश्चित होता है।
5. शिक्षण विधियाँ	औपचारिक शिक्षा में निश्चित अनौपचारिक में निश्चित नहीं	अनुदेशन में भाषण विधि, प्रश्नोत्तर विधि, वाद-विवाद विधि आदि निश्चित विधियाँ हैं
6. शिक्षण - संस्थाएँ	औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार की संस्थाएँ शिक्षा प्रदान करने का कार्य करती हैं।	केवल औपचारिक संस्थाओं, विशेषकर विद्यालय में ही प्रदान किया जाता है।
7. अवधि	औपचारिक शिक्षा की अवधि निश्चित परंतु अनौपचारिक शिक्षा की अवधि अनिश्चित होती है।	अनुदेशन में अवधि निश्चित होती है।
8. समय	औपचारिक शिक्षा में निश्चित और अनौपचारिक शिक्षा में अनिश्चित	स्कूलिंग की तरह इसका भी निश्चित समय होता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

APCO
Date
Page

प्रशिक्षण	प्रतिपादन
1. प्रशिक्षण एक संकुचित अवधारणा है, जो किसी कार्य को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करने की योग्यता है।	प्रतिपादन का क्षेत्र सीमित है क्योंकि इस प्रकार की शिक्षा में केवल औपचारिक शिक्षा ही आती है।
2. प्रशिक्षण का उद्देश्य व्यक्ति में किसी विशेष कौशल का विकास करना होता है।	इसमें भावात्मक पक्ष से संबंध होता है, प्रतिपादन शिक्षा का अर्थ है- मस्तिष्क को खोना।
3. प्रशिक्षण में कई बार बच्चे अपने माता-पिता से विभिन्न व्यवसायों का प्रशिक्षण प्राप्त कर लेता है। औपचारिक, मौखिक	प्रतिपादन का प्रभाव जीवन के केवल राजनीतिक तथा धार्मिक पक्ष पर अधिक होता है।
4. प्रशिक्षण का एक निश्चित तथा पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रम होता है।	4 अनिश्चित
5. इसमें क्रियात्मक विधियों जैसे प्रदर्शन का प्रयोग होता है।	प्रतिपादन में भाषण-विधि का सबसे अधिक स्थान है। उपदेश पर अधिक बल दिया गया है।
6. इसमें केवल औपचारिक अथवा विभिन्न शैलियों के विकास के लिए विशेष रूप से स्थापित हैं।	औपचारिक
(7) इसकी अवधि निश्चित होती है, प्रत्येक व्यवसाय का प्रशिक्षण कुछ वर्षों या कुछ मास तक चलता है।	प्रतिपादन की प्रभावशाली अवधि किशोरावस्था है, निश्चित
8. समय निश्चित होता है	— निश्चित

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

	शिक्षा	अनुदेशन
1. शिक्षक अध्यापक	औपचारिक शिक्षा में विशेष अध्यापक, परंतु अनौपचारिक शिक्षा में सभी अध्यापक,	विशेष रूप से नियुक्त अध्यापक ही कार्य करते हैं।
2. मूल्यांकन	औपचारिक शिक्षा में मूल्यांकन आवश्यक, अनौपचारिक में नहीं,	इसमें मूल्यांकन आवश्यक होता है ताकि ज्ञात हो कि बच्चे ने किस सीमा तक प्रदत्त ज्ञान ग्रहण किया
3. अनुशासन	शिक्षा जो आजीवन प्रक्रिया है, सामाजिक अनुशासन पर बल देती है।	अनुदेशन में आदेश द्वारा बच्चे को अनुशासित किया जाता है।
10. तर्क	होता है।	— होता है।
11. प्रमाण-पत्र	औपचारिक शिक्षा में प्रमाण पत्र प्रदान किए जाते हैं।	परीक्षा उत्तीर्ण करने पर प्रमाण-पत्र प्रदान किए जाते हैं।
4) बालक का स्थान	बालकेन्द्रित	अध्यापक केन्द्रित
18) ज्ञान में स्थिरता	स्थायी	अस्थायी
19. प्रभाव	सम्पूर्ण जीवन पर पड़ता है।	ज्ञानात्मक पक्ष
13) प्रेरणा-स्रोत	सामाजिक प्रतिष्ठा	ज्ञानात्मक पहलू
4) आयु/अवस्था	प्रत्येक अवस्था	प्रत्येक अवस्था
(5) बालक वर्ग	तेजस्वी बुद्धि वाले बालक	कम बुद्धि व मंद बुद्धि

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

APCO
Date
Page

	प्रशिक्षण	प्रतिपादन
9.	अध्यापक परन्तु है।	अध्यापक जरूरी है।
10.	प्रशिक्षण अवधि समाप्त होने पर उसका मूल्यांकन आवश्यक है।	मूल्यांकन आवश्यक
11.	अनुशासन उत्पन्न करने के लिए क्रियात्मक पक्ष उपयोगी है, आत्म - अनुशासन पर बल दिया जाता है।	प्रतिपादन में पहले से निर्धारित ज्ञान को बताकर बच्चे को अनुशासित किया जाता है।
12.	— होता है।	प्रतिपादन में अंधविश्वास पर जोर होता है, इस प्रकार की शिक्षा में तर्क का कोई स्थान (नहीं होता)
13.	प्रशिक्षण में निर्धारित परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात प्रमाण-पत्र दिया जाता है।	—
14.	अध्यापक केन्द्रित	अध्यापक केन्द्रित
15.	स्थायी	स्थायी
16.	विशेष कौशल	भावात्मक कौशल
17.	आर्थिक पहलू	धार्मिक पक्ष
	किशोरावस्था	किशोरावस्था

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

16No
8No. 5 > **शिक्षण के स्तर :-**

शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया बहुत ही जटिल प्रक्रिया हैं। इस प्रक्रिया में अधिगम आर्जित करने के लिए विभिन्न शिक्षण क्रियाओं को सम्पूर्ण किया जाता हैं। व्यक्ति अधिगम प्रक्रिया के दौरान बहुत कुछ सीखता हैं कुछ प्रत्यक्ष रूप से कुछ अप्रत्यक्ष रूप से इन सीखे गए अनुभवों में से कुछ तो लम्बे समय तक मस्तिष्क में रहते हैं तो कुछ बार-2 याद आते हैं और कुछ हम भूल भी जाते हैं। यह शिक्षण स्तर के कारण होता हैं।
हर स्कूल में विभिन्न स्तर होते हैं। प्रत्येक स्तर पर विभिन्न प्रकार की पाठ्य वस्तु का शिक्षण किया जाता हैं। हर स्तर का पाठ्यक्रम अलग होता हैं। हर स्तर पर विभिन्न शिक्षण क्रियाओं द्वारा भिन्न-2 उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता हैं।

8No. 4 > **स्मृति स्तर (हर्बर्ट) :-**

स्मृति केवल एक मानसिक योग्यता हैं। इस स्तर का शिक्षण व अधिगम सबसे निम्न कोटी का माना जाता हैं, क्योंकि इस में विद्यार्थी विषय वस्तु को केवल रटते हैं और रटकर अपनी स्मृति में संचित करने का प्रयास करते हैं।

Imp > **स्मृति की अवस्थाएँ :-** In Book (अधिगम, धारण, प्रतिस्मरण और पहचान)

> स्मृति स्तर के शिक्षण की विशेषताएं :-

1) शिक्षक केन्द्रित
2) विद्यार्थियों को कम महत्त्व
3) शिक्षक विद्यार्थी के बीच अन्तः क्रिया नहीं होती
4) रटने पर बल
5) अभिप्रेरणा का अभाव
6) बुद्धि को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता
7) मूल्यांकन पारंपारिक ढंग से
8) बौद्ध स्तर के शिक्षण का आधार
9) विद्यार्थियों को अधिक स्वतंत्रता नहीं होती

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

10) समायोजन में सहायता
11) पूर्ण स्मरण में सहायक
12) चिंतन स्तर के शिक्षण का आधार

> स्मृति स्तर के शिक्षण का वृद्धिमान :-

वृद्धिमान :-

किसी विशेष उद्देश्यों के अनुसार व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया अर्थात किसी उद्देश्य के अनुसार को ढालने की प्रक्रिया प्रतिमान कहलाती है। शिक्षण तथा अधिगम प्रक्रिया को को अधिक सरल, स्पष्ट तथा मूर्त प्रदान करने के लिए शिक्षक जिन प्रतिमानों का प्रयोग करता है, उसे शिक्षण प्रतिमान कहते हैं।

प्रतिमान का अर्थ

किसी आदर्श के संदर्भ में

किसी भी वस्तु का छोटा आकार

> स्मृति स्तर के शिक्षण का प्रतिमान प्रसिद्ध शिक्षा में हरबर्ट ने दिया था। इस प्रतिमान के निम्नलिखित चरण हैं :-

1) उद्देश्य :-
   1) मानसिक पक्षों का प्रशिक्षण
   2) तथ्यों का ज्ञान देना
   3) सीखे हुए तथ्यों को याद करना
   4) प्रस्तुतीकरण

2) संस्थना :-
   1) तैयारी या योजना
   2) उद्देश्य / प्रस्तुतीकरण
   3) तुलना व संबंध

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

4) सामान्यीकरण
5) प्रयोग

3) सामाजिक प्रणाली :-

4) मूल्यांकन प्रणाली :-

> स्मृति स्तर के शिक्षण अधिगम मूल्य :-

1) शिक्षण अधिगम छोटी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हैं।
2) ~~शिक्षक की भूमि का~~ महत्वपूर्ण
2) केवल रटने योग्य प्रत्यय कुछ विषयों में
3) शिक्षक की भूमि महत्वपूर्ण
4) शिक्षक पाठ्य - सामग्री का नियोजन अपने अनुसार
5) शिक्षक को अधिक स्वतंत्रता
6) पाठ्य - सामग्री का प्रस्तुतीकरण स्वतंत्रता पूर्वक
7) बौद्ध - स्तर के चिंतन का आधार
8) विद्यार्थी विद्यार्थी का गौण सिद्धांत
9) चिंतन स्तर का आधार
10) अन्त : क्रिया का अभाव

> स्मृति स्तर के शिक्षण में दोष :-

1) शिक्षण अधिगम निम्न कोटी का
2) रट कर ज्ञान प्राप्त
3) मानसिक विकास में सहायक नहीं
4) वास्तविक जीवन में प्रयोग नहीं
5) शिक्षक पर अधिक कार्य भार
6) अस्थायी ज्ञान नहीं
7) विद्यार्थी निष्क्रिय

→

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

>> बौद्ध स्तर का शिक्षण :- (समझकर)

बौद्ध स्तर के शिक्षण का सिद्धांत प्रतिपादन मोरिसन ने किया था। बौद्ध शब्द का अर्थ है, भाषा में प्रयोग होने वाले शब्दों के अर्थ को समझना।

> बौद्ध शब्द का अर्थ :-

1) अर्थ को समझना, विचार ग्रहण करना, अर्थ की व्याख्या करना
2) किसी भाषा में प्रयुक्त शब्दों के अर्थ को जानकर व्याख्या करना

> बौद्ध स्तर के शिक्षण का प्रतिमान :-

1) उद्देश्य :-
बौद्ध स्तर के शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थी को प्रत्यय पर अधिकार करवाना है।

2) संरचना :-
i) अनवेक्षान
   a) पूर्व-ज्ञान का पता लगाना
   b) पाठ्य वस्तु का विश्लेषण
   c) पूर्व योजना
ii) प्रस्तुतीकरण
   a) पाठ्य वस्तु को लघु इकाईयों में प्रस्तुत
   b) निदान
   c) पूर्णा-वृत्ति
iii) परिपात (आत्म सातकरण)
प्रस्तुतीकरण के पश्चात् जब शिक्षक यह सुनिश्चित कर लेता है कि विद्यार्थी नवीन ज्ञान को समझ चुके है तो वह विद्यार्थियों को आत्म सातकरण के लिए अवसर प्रदान करता है।
iv) संगीमन

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

जब आत्मसातकरण प्रक्रिया द्वारा विद्यार्थी पाठ्य-वस्तु पर स्वामित्व प्राप्त कर लेते हैं तब वे पाठ्य-वस्तु की प्रकृति के अनुसार उसका संगठन करते हैं। और पाठ्य-वस्तु को अपने शब्दों में प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं।

v) वर्णन करना :-

इसमें विद्यार्थी शिक्षक तथा सहपाठियों के समक्ष पाठ्य-वस्तु को मौखिक व लिखित रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं।

3. सामाजिक प्रणाली :-

इस स्तर के शिक्षण में शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह तानाशाह के रूप में व्यवहार ना करें।

4. मूल्यांकन प्रणाली :-

इस स्तर के शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षक को अभिप्रेरित अधिगम कार्यक्रम का प्रयोग करना चाहिए।

> बौद्धिक स्तर के शिक्षण के गुण :-

1. अधिक स्थाई ज्ञान प्राप्त :-
2. रटने की बजाए समझने पर बल
3. ज्ञान का व्यवहारिक रूप
4. बुद्धि का उचित प्रयोग
5. पाठ्य-वस्तु कर्मबद्ध रूप से प्रस्तुत
6. आत्म सातकरण
7. विचार शक्ति का प्रयोग
8. चिंतन स्तर के शिक्षण का प्रभाव
9. पाठ्य-वस्तु व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

> चिंतन स्तर का शिक्षण :-

चिंतन स्तर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का सर्वोच्च स्तर है तथा स्मृति स्तर व बौद्ध स्तर की तुलना में या अधिक विचार युक्त एवं उपयोगी होता है। इस स्तर पर विद्यार्थी कभी अधिक अनुभव प्राप्त अनुभव प्राप्त कर सकता है। जब उसने स्मृति व बौद्ध स्तर आर्जित अर्जित किए हों।

> चिंतन स्तर के शिक्षण प्रतिमान :-

1) उद्देश्य :-

i) समस्या समाधान क्षमता का विकास
ii) स्वतंत्र चिंतन शक्ति का विकास
iii) आलोचनात्मक चिंतन का विकास
iv) सृजनात्मक चिंतन का विकास

2) संरचना :-

i) समस्यात्मक परिस्थिति
ii) उपकलपना निर्माण
iii) आँकड़े एकत्रित व इकट्ठे करना
iv) उपकल्पना परिक्षण
v) निष्कर्ष

3) सामाजिक प्रणाली :-

4) इस स्तर पर विद्यार्थी का स्थान प्रमुख और अध्यापक का स्थान छोटा होता है।

4) मूल्यांकन प्रणाली :-

विद्यार्थीयों की क्षमताओं का उचित मूल्यांकन केवल निबंधात्मक परिक्षाओं के द्वारा उचित ढंग से किया जा सकता है।

> चिंतन स्तर के शिक्षण अधिगम के गुण :-

1) शिक्षण अधिगम विद्यार्थी केन्द्रित
2) स्मृति व बौद्ध स्तर से अधिक विचारयुक्त एवं उपयोगी
3) समस्या समाधान की क्षमताओं का विकास
4) शिक्षक विद्यार्थी अंतक्रिया
5) सृजनात्मक क्षमता का विकास

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

6) आलोचनात्मक चिंतन का विकास
7) स्थाई ज्ञान प्राप्त

> **दोष** :-

1) केवल उच्च स्तर के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी।
2) पाठ्य - वस्तु का व्यवस्थित ना होना
3) पाठ्य - वस्तु में क्रम बद्धता का अभाव
4) अध्यापक का गौण स्थान

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner